शिक्षण विधाओं से परे

❑ लता

स्कूल बच्चे के सीखने का प्रमुख केन्द्र है लेकिन बच्चे की सीखने की प्रक्रिया सिर्फ स्कूल तक सीमित नहीं होती । बच्चे के सीखने में बहुत कुछ स्कूल की परिधि से परे निष्पन्न होता है । जाहिर है वहां बच्चे के सीखने–सिखाने में उसके अभिभावकों सहित बड़ों की भूमिका ही महत्त्वपूर्ण होगी । शिक्षण के संदर्भ में इसीलिए समाज और परिवेश की बात बार–बार उठायी जा रही है । बच्चे के संवेगात्मक विकास के मामले में कितनी ही ऐसी बातें हैं जो सामान्यत: मामूली दिख सकती हैं लेकिन उन्हें नजर अंदाज कर देने के क्या परिणाम हो सकते हैं, इसका कुछ अनुमान इस चर्चा से मिल सकता है ।

एक बार मुझे सहज शिक्षा केन्द्र के बच्चों से मिलने हीरापुरा गांव जाना था । सर्दियों की रात थी । गांव के लोग जहां तहां आग जलाकर बैठे थे । एक जगह आग के पास कुछ बच्चे जमा थे । वहीं एक कुतिया अपने चार पिल्लों को दूध पिला रही थी । अचानक दो बच्चों ने एक पिल्ले को उसकी दोनों टांगों से पकड़ कर उठा लिया। पिल्ला दर्द के मारे कूं–कूं करने लगा । कुतिया असहाय–सी अपनी पूंछ जोर–जोर से हिलाने लगी । कभी वह बच्चों के पैरों को चाटती तो कभी अपनी पिल्ले को सजल नेत्रों से निहारने लगती । बच्चे पिल्ले के कूँ–कूँ करने पर बेहद खुश थे। कुछ दूरी से मैं यह सब देख रही थी । उम्मीद थी कि आस–पास बैठे लोगों में से कोई उन बच्चों को मना करेगा । या रोक कर समझा देगा। लेकिन मेरी आशा के विपरीत पिल्ले के कूँ–कूँ करने पर खुश होते हुए बच्चों ने उसे ठीक आग के ऊपर लटका दिया। पिल्ले की एक टांग बच्चे के हाथ में थी । पिल्ला बुरी तरह छटपटाने लगा । कुतिया भौंकती हुई आग के चारों ओर चक्कर काटने लगी । इस पर आस–पास बैठे लोगों में से एक ने (जो अपनी बातचीत में पूरी तरह मशगूल था) गाली बकते कुए कुतिया के पत्थर दे मारा । यह देखकर मैं दौड़ कर घटनास्थल पर पहुंची। पिल्ले को बच्चों के हाथों से छुड़वा कर उसकी माँ (कुतिया) को लौटाया । फिर लोगों से पूछा आपने इन बच्चों को ऐसा करने से रोका क्यों नहीं ? उन्हें यह बात क्यों नहीं समझाई कि पिल्ले को भी आदमी की तरह पीड़ा होती है ? इस पर उन ग्रामीणों ने बहुत ही हल्के ढंग से जवाब दिया, ''क्या हो गया बहन जी ? पिल्ले तो टाबरों के खिलौने हैं अगर यह उनसे नहीं खेलेंगे तो किससे खेलेंगे?'' जवाब सुनकर मैं स्तब्ध रह गई और लोग पुन: अपनी बातचीत में लीन ।

यह दूसरा वाकया जयपुर शहर का है । दोपहर तीन–चार बजे का समय होगा कि पड़ौस की बच्ची की चीख सुनाई दी । देखा कि आठ साल की नेहा स्कूल से लौटी थी । हाथ में टिफिन और पीठ पर बैग लटका था । नेहा खूब जोर–जोर से रो रही थी । एक बेहद पतला और काला पिल्ला उसके चारों ओर मंडरा रहा था, (उसको देखकर साफ लग रहा था

कि वो कई दिनों से भूखा था) और अपनी पूंछ तेजी से हिला रहा था । नेहा एक कदम पीछे खिसकती, हाथ से पिल्ले को डराती और फिर मां को संबोधित करती रो रही थी। नेहा की माँ दौड़कर बाहर आयी । पास ही रखी लकड़ी से पिल्ले को मार कर भगा दिया । नेहा का रोना बन्द हो गया। मैनें बातचीत की तो पाया कि नेहा के टिफिन में खाना था (इसी कारण पिल्ला दुम हिलाता नेहा के पास जा पहुंचा था) ।

यह दो घटनाएं मात्र चन्द मिनटों में घटित हुईं । इसी तरह की सैंकड़ों घटनाएं रोजाना घटती हैं और हमारी दिनचर्या का हिस्सा बन जाती हैं । मुझे हमेशा लगता रहा है कि ऐसी घटनाएं मामूली नहीं हैं । दूसरी वाली घटना में बच्ची बुरी तरह भयभीत थी। बच्चों में अपने ही समान सजीव प्राणी के प्रति यह क्रूरता और भय कहां से आया ? क्या हम जो कि बच्चों के आस–पास के परिवेश निर्माता हैं, वह इस बात के लिए जिम्मेदार नहीं हैं ? चाहे वह गांव के हों या शहर के, साक्षर हों या निरक्षर, हम लोग अपने ही समान जीते जागते दर्द और प्यार को महसूस करने वाले तमाम प्राणियों के साथ इस तरह उपेक्षा का व्यवहार क्यों करते हैं ? क्यों हम बच्चों में भी शुरू से इस व्यवहार के बीज बो देते हैं ? अगर बच्चा राह चलते पत्थर मारकर किसी जानवर की टांग तोड़ देता है और हमारे लिए यह तनिक भी सोचने का विषय नहीं होता तो क्यों हम इस बात को चर्चा का विषय बनाते हैं कि दुर्घटना में लहुलुहान पड़े व्यक्ति को देखकर लोग इधर–उधर हो जाते हैं ? हम क्यों दुखी रहते हैं इस बात से कि समाज में महिला व पुरूषों में असमानता है और महिलाओं की तकलीफों को समझा नहीं जाता । जीवन की हर घटना मनुष्य पर प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से अपना प्रभाव जरूर छोड़ जाती है । जानवरों के लिए बच्चों में नकारात्मक या उदासीनता का भाव हर घटना के साथ बढ़ता जाता है । जानवरों की पीड़ा या भावनाएं उन्हें अपने से कमतर लगती जाती हैं । यही भाव आगे चलकर अपने अलावा अन्य सभी लोगों की भावनाओं में फर्क करने में योग देता है । इन सब बातों के साथ मेरा मानना है कि हमें इस मूक सजीव जगत को उसके असल रूप में स्वीकार करना चाहिए। जीवन और व्यवहार की बहुत–सी बारीकियां बच्चे इस मूक सजीव जगत से सहज ही सीख सकते हैं । शिक्षण विद्याओं से परे बच्चे रोजाना अपने आस–पास के जानवरों के साथ होने वाले व्यवहार को देखते या करते हुए जीवन के मूलभूत भाव प्रेम, दया, करूणा, समानता, क्रूरता, नफरत, हिंसा को ग्रहण कर लेते हैं। जो बाद में उनके पूरे जीवन को दिशा देने की भूमिका अदा करते हैं । बच्चों के जीवन की दिशा सकारात्मक हो या नकारात्मक, इस बात को तय करने में हम बड़ों का हाथ होता है क्योंकि हम अपने भावों और व्यवहारों को ही बच्चों में स्थानान्तरित करते हैं ।

यदि हम चाहते हैं कि बच्चे तकनीकी और विषयगत शिक्षण के अलावा अपने चरित्र को भी सार्थक दिशा दे सकें तो जानवरों के समूचे जगत के प्रति हमें वास्तव में संवेदनशील व्यवहार अपनाना होगा । शिक्षण का जीता जागता माध्यम बनाना होगा, क्योंकि मनुष्य द्वारा पृथ्वी पर आमूल परिवर्तन करने पर भी जानवर अपने नैसर्गिक गुणों को पूरी ऊर्जा के साथ संरक्षित किये हुए हैं । ◆